2 अगस्त 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये
जी-जागरण पर
प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 9 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ब्र.यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

1. दुधनी-सोलापुर (महा.) : यहाँ दिनांक 8 से 15 जुलाई तक अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर सिद्धचक्रमण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र.यशपालजी द्वारा दोपहर एवं रात्रि में सिद्धचक्र विधान पर एवं 'जिनधर्म का प्राथमिक तत्त्वज्ञान' विषय पर प्रवचन हुये। ब्र. प्रीतेशजी कोठारी ने सिद्धचक्र विधान के बीच-बीच में पूजन का अर्थ समझाया। रात्रि में आपके प्रवचन का लाभ भी मिला। उनके पिताजी एवं ब्र.बहन श्रुतिका का भी तत्त्वप्रचार में अच्छा सहयोग रहा।

विधान में कुबेर चौगुले मण्डल, उदगांव का सहयोग प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर 10 से अधिक लोगों ने नियमित स्वाध्याय का नियम लिया एवं अनेक लोगों ने अभक्ष्य भक्षण का त्याग किया।

2. सांगली (महा.) : यहाँ नेमीनगर में श्री पी.एम. पाटील के प्रवचन हॉल में रात्रि 7 से 8 बजे तक शंका समाधान एवं प्रवचन हुये। ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रतिदिन सायंकाल पण्डित प्रसन्नजी शेटे शास्त्री द्वारा एवं प्रात:काल पण्डित अभिजीतजी अलगोंडर शास्त्री द्वारा नियमित स्वाध्याय चलाया जाता है।

3. कोल्हापुर (महा.) : यहाँ दिनांक 17 जुलाई को प्रवचन एवं सर्वोदय समिति के कार्यकर्ताओं को उद्‌बोधन दिया गया।

4. हेरले (महा.) : यहाँ दिनांक 17 जुलाई को प्रवचन हॉल का निरीक्षण कर कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया गया।

5. मुम्बई : यहाँ मलाड (ई.) में दिनांक 7 जुलाई को 'मुनि के जीवन में निर्जरा' विषय पर प्रवचन हुये।

सभी स्थानों पर तत्त्वप्रचार द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई।

- डी. आर. शाह, इण्डी

धार्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

चैन्नई (तमिलनाडु) : यहाँ पुषल क्षेत्र में स्थित श्री चतुर्मुख चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनमंदिर में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र, पोन्नूर हिल एवं स्थानीय मन्दिर ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 से 31 मई तक त्रिदिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जम्बूकुमारनजी शास्त्री, डॉ. धनकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित जयराजनजी शास्त्री, पण्डित नाभिराजनजी शास्त्री, पण्डित बाबूजी शास्त्री, पण्डित सोमप्रभजी शास्त्री, पण्डित जयकुमारजी शास्त्री आदि के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग 200 आत्मार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

तीर्थधाम सम्मेदशिखर में निर्माणाधीन कुन्दकुन्द कहान नगर में -

शिलान्यास महोत्सव संपन्न

सम्मेदशिखरजी : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा तीर्थधाम सम्मेदशिखर में निर्माणाधीन संकुल श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनमन्दिर की पाँच वेदिओं का शिलान्यास दिनांक 1 से 3 जुलाई 2011 तक सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित नीलेशकुमारजी मुम्बई आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 1 जुलाई को प्रात: जिनेन्द्र शोभायात्रा तेरापंथी कोठी से श्री कुन्दकुन्द कहान नगर तक आई। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री भभूतमल चंपालाल भण्डारी परिवार बैंगलोर द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई द्वारा निर्माणाधीन कार्य की प्रगति विवरण प्रस्तुत किया गया।

श्री आदिनाथ भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री रमेशभाई कोदरलाल दोशी परिवार (सुदासना) मुम्बई द्वारा, श्री महावीर भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री महावीरप्रसादजी चौधरी परिवार कोलकाता द्वारा, श्री सीमंधर भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री चक्रेशकुमार, अशोककुमार एवं सुशीलकुमार बजाज परिवार कोलकाता द्वारा, मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री नीमेषभाई केतनभाई शाह व श्री अनंतराय ए.सेठ परिवार मुम्बई द्वारा तथा श्री चंद्रप्रभ भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री विमलकुमारजी जैन (नीरु केमीकल्स, दिल्ली) परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर इन सभी प्रतिमाओं के विराजमानकर्ता की स्वीकृति भी इन्हीं परिवारों द्वारा मिल गयी।

शाकाहार दिवस मनायें

पशुओं के अधिकारों के लिये कार्य कर रही संस्था पीपल फॉर एनिमल लिबरेशन (पाल) द्वारा 9 अगस्त को देशभर में शाकाहार दिवस मनाया जायेगा। इस दिन पाल के सदस्य शाकाहार समर्थकों के साथ मिलकर लोगों को मांस मुक्त आहार अपनाने के लिए अपील करेंगे। आप भी अपने नगर/ गांव में इसका आयोजन करना चाहते हैं तो संपर्क करें -

E-mail : info@palindia.org Mob : 8094082001

सम्पादकीय – 61

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ९७

अब प्रस्तुत गाथा में चूलिका के रूप में द्रव्यों का मूर्त्त–अमूर्त्तपना तथा चेतन–अचेतनपना बताते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

आगासकालजीवा धम्माधम्मा य मुत्तिपरिहीणा।
मुत्तं पुग्गलदव्वं जीवो खलु चेदणो तेसु।।९७।।

(हरिगीत)

जीव अर आकाश धर्म अधर्म काल अमूर्त हैं।
मूर्त पुद्गल जीव चेतन शेष द्रव्य अजीव हैं।।९७।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव मूल गाथा में कहते हैं कि आकाश, काल, जीव, धर्म व अधर्म अमूर्त हैं, पुद्गल मूर्त्त हैं, उनमें जीव चेतन है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि जिसमें स्पर्श–रस–गंध–वर्ण का सद्भाव है वह मूर्त्त है। जिनमें उक्त गुणों का अभाव है, वे अमूर्त्त हैं। जिसमें चेतन्य का सद्भाव है, वह जीव है। जीव निश्चय तो अमूर्त ही है, पर व्यवहार से मूर्त्त द्रव्य के संयोग की अपेक्षा से मूर्त भी कहा जाता है।

कवि हीरानन्दजी का इकतीसा सवैया अधूरा उपलब्ध है, जैसा उपलब्ध है, वैसा ही दिया जा रहा है –

(दोहा)

व्योम काल आतम धरम, अधरम मूरति हीन।
पुद्गल मूरतिवंत है, जीव चेतना लीन।।४२३।।

(सवैया इकतीसा)

रूप–रस गंध फास च्यारौं भेद मूरतिकै,
इनके अभावसौं अमूरतीक कहिए।
नभ काल जीव–सुद्ध धर्म औ अधर्म पाँचौं,
मूरति बिनाही द्रव्यसीमा भेद गहिए।।
पुग्गलसरूप अनू एक मूरतीक मूरतीक कहा,
जथाभेद जानैहीतैं अंत बिना रहिए।।४२४।।

इस गाथा में गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने विशेष बात यह कही है कि ''पुद्गल द्रव्य मूर्तिक है एवं अचेतन है तथा आत्मा चेतन व अमूर्तिक है। यह बताकर वे आत्मा पर पदार्थों से जुदा है'' – ऐसा कहते हैं। जो पदार्थ आत्मा से जुदे हैं, उनका त्याग आत्मा इस प्रकार करे कि कुटुम्ब, पैसा, शरीर वगैरह से तो आत्मा जुदा ही है, जब आत्मा ने उन्हें ग्रहण ही नहीं किया तो त्याग किसका करे? अतः आत्मा पर का ग्रहण–त्याग नहीं करता। पर वस्तु को छोड़ना नहीं पड़ता। वह तो छूटी ही पड़ी है। समस्त पर पदार्थ अपने आत्मा से त्रिकाल भिन्न ही हैं। विकार को भी छोड़ना नहीं है, जो विकार हो चुका, वह अगले क्षण छूटने वाला ही, वर्तमान–शुद्धस्वभाव की प्रतीति होने पर मिथ्यात्व की उत्पत्ति ही नहीं होती।''

इसप्रकार इस गाथा का स्पष्टीकरण हुआ। ●

गाथा– ९८

अब प्रस्तुत गाथा में द्रव्यों की सक्रियता और निष्क्रियता के विषय में कहा जा रहा है। मूल गाथा इसप्रकार है –

जीवा पोग्गलकाया सह सक्किरिया हवंति ण य सेसा।
पोग्गलकरणा जीवा खंधा खलु कालकरणा दु।।९८।।

(हरिगीत)

सक्रिय करण–सह जीव–पुद्गल शेष निष्क्रिय द्रव्य हैं।
काल पुद्गल का करण पुद्गल करण है जीव का।।९८।।

बाह्य साधन सहित जीव और पुद्गल सक्रिय हैं। शेष द्रव्य सक्रिय नहीं है, निष्क्रिय हैं। जीव का बाह्य करण (साधन) कर्म–नोकर्मरूप पुद्गल तथा पुद्गल की सक्रियता में काल साधन (करण) है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि – यहाँ द्रव्यों का सक्रिय व निष्क्रियपना कहा है। प्रदेशान्तर प्राप्ति का हेतु परिस्पन्दन रूप पर्याय क्रिया है वहाँ बहिरंग साधन के साथ रहने वाले जीव सक्रिय हैं, बहिरंग साधन के साथ रहने वाले पुद्गल सक्रिय हैं। आकाश निष्क्रिय हैं, धर्म द्रव्य निष्क्रिय हैं, अधर्म निष्क्रिय हैं, काल निष्क्रिय हैं। जीवों को सक्रियपने का बहिरंग साधन कर्म–नोकर्म के संचयरूप पुद्गल हैं; इसलिए जीव पुद्गल करण वाले हैं। उसके पुद्गल करण के अभाव के कारण सिद्धों को निष्क्रियपना है। अर्थात् सिद्धों को कर्म–नोकर्म के संचयरूप पुद्गलों का अभाव होने से वे सिद्ध निष्क्रिय हैं।

पुद्गल के अभाव के कारण सिद्धजीव निष्क्रिय हैं। पुद्गलों को सक्रियपने का बाह्य साधन परिणाम निष्पादक काल है। इसलिए पुद्गल काल साधन वाले हैं।

कर्मादिक की भाँति कालद्रव्य का अभाव नहीं होता, इसलिए सिद्धों की भाँति पुद्गलों को निष्क्रियपना नहीं होता।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

परदेससेती और परदेसविषै जाना,
परजायरूप क्रिया ग्रंथनिमैं भाखी है।
कर्मरूप पुग्गल का बाहिर निमित्त पाय,
जीव क्रियावंत बिना कर्म क्रिया नाखी है।।
बाहिर निमित्त परिनाम निमित्तकारी काल,
तातैं पुग्गलानु क्रियावंत सदा राखी है।
च्यारौं बाकी रहै द्रव्य निक्रिय सुभाव ते हैं,
ग्यानी यथा–रूप जानै जिनराज साखी है।।४२७।।

(दोहा)

जे परदेस अडौल नित, ते निष्क्रिय पहिचान।
जिनकै हलन–चलन लसै, ते हैं किरियावान।।४२८।।

एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने रूप क्रिया ग्रन्थों में कही है। कर्म रूप पुद्गलों का बाह्य निमित्त पाकर जीव क्रियावान होता है। शेष चारों द्रव्य निष्क्रिय स्वभाव के हैं। ज्ञानी उन सबके स्वरूप को यथायोग्य रीति से जानते हैं। संसारी जीव क्रियावान हैं, किन्तु सिद्ध निष्क्रिय होते हैं। क्योंकि उनमें हलन–चलन रूप क्रिया नहीं होती।

यहाँ गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि जीव और पुद्गल द्रव्यों में कुछ का क्षेत्रान्तर होने का स्वभाव है, सिद्धों का नहीं है। जो जीव व पुद्गल क्षेत्रान्तर होते हैं, उनमें परद्रव्य निमित्त होते हैं।

जीव संसार दशा में जब अपने कारण गति करता है, तब उसमें कर्म एवं शरीर को निमित्त कहा जाता है, परन्तु यदि प्रस्तुत कर्म–नोकर्म गति कराते हों तो धर्मद्रव्य व अधर्म को भी गति करा देते, परन्तु यह तो संभव नहीं है; क्योंकि उनके उपादान में गति करने की योग्यता ही नहीं है। जीव में स्वयं में उपादान योग्यता गमन करने की है तो कर्म–नोकर्म को निमित्त कहा जाता है।

अब पुद्गल की बात करते हैं। लक्ष्मी, मकान, रोटी, दाल–भात वगैरह जो पुद्गल स्कन्ध स्वयं अपने कारण क्षेत्रान्तर गमन करते हैं, वही उसके उपादानकारण हैं, उसमें निमित्तकारण काल द्रव्य है।

देखो, जीव का निमित्तपना निकाल दिया, तथा काल को निमित्त कारण कहा है। इसीप्रकार मकान में राग, रोग में साता कर्म का उदय, अलमारी ऊँचा करने में जीव, पुद्गलादि के परिणमन में अन्य को निमित्त न कहकर मात्र काल द्रव्य को निमित्त कहा है।

स्वकाल में परिणमित पुद्गलों को मात्र काल निमित्त है – ऐसा कहकर सूक्ष्म भेदज्ञान कराया है। उन पुद्गलों के परिणमन का तो वही स्वकाल है; इसलिए उस पर से दृष्टि उठाओ। निमित्त का कथन करके तो परद्रव्यरूप निमित्त का ज्ञान मात्र कराया है।''

भावार्थ में गुरुदेव कहते हैं कि – एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में गमन करने को क्रिया कहते हैं। छह द्रव्यों में से जीव को क्षेत्रान्तर करने में पुद्गल निमित्त होता है; क्योंकि उक्त दोनों द्रव्य क्रियावन्त हैं। शेष चार द्रव्य निष्क्रिय एवं निकम्प हैं।

क्षेत्रान्तर होना जीव की स्वाभाविक क्रिया नहीं है। संसारावस्था में स्वयं की तत्समय की योग्यता एवं कर्म के निमित्त से क्रिया होती है। सिद्ध होने पर कर्म–नोकर्म का अभाव हो जाता है। इसकारण तथा निष्क्रिय रहना ही स्वाभाविक क्रिया होने से सिद्धदशा में जीव निष्क्रिय रहता है।●

गाथा– ९९

जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहिं होंति ते मुत्ता।
सेसं हवदि अमुत्तं चित्तं उभयं समादियदि।।९९।।

(हरिगीत)

हैं जीव के जो विषय इन्द्रिय ग्राह्य वे सब मूर्त हैं।
शेष सब अमूर्त हैं मन जानता है उभय को ।।९९।।

जो पदार्थ जीवों के इन्द्रिय ग्राह्य विषय हैं, वे मूर्त हैं और शेष पदार्थ समूह अमूर्त हैं। चित्त उन दोनों को ग्रहण करता है, जानता है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि ''यह मूर्त और अमूर्त के लक्षण का कथन है। इस लोक में जीवों द्वारा स्पर्शनइन्द्रिय, रसनाइन्द्रिय, घ्राणइन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय द्वारा उनके विषय–स्पर्श, रस, गंध और वर्ण स्वभाव वाले पदार्थ ग्रहण होते हैं और श्रोत इन्द्रिय द्वारा वही पदार्थ शब्दाकार परिणत होकर ग्रहण होते हैं। वे पदार्थ कदाचित् स्थूल या सूक्ष्मपने को प्राप्त होते हुए तथा कदाचित् परमाणुपने को प्राप्त होते हुए इन्द्रियों द्वारा ग्रहण होते हों या न होते हों, किन्तु इन्द्रियों द्वारा ग्रहण होने की योग्यता का सदैव सद्भाव होने से मूर्त कहलाते हैं।

स्पर्श–रस–गन्ध–वर्ण का अभाव जिसका स्वभाव है – ऐसा शेष अन्य समस्त पदार्थ समूह इन्द्रियों द्वारा ग्रहण होने की योग्यता के अभाव के कारण 'अमूर्त्त' कहलाता है।

इस गाथा के भाव को कवि हीरानन्दजी पद्य में इसप्रकार कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

रसना परस घ्राण चच्छु कान इन्द्री जान,
इन जोगि विषै हैं ते मूरत बखानै हैं।
सेष अरथ पाचौं मैं वरनादि गुन नाहिं,
तातैं एक मूरतीक ग्रन्थनि मैं जानैं है।।
मनसा विचार जोगि मूरत–अमूरत है,
श्रुतज्ञान साधन तैं अर्थ पुंज मानै हैं।
ऐसा जिनराज वानी का है विसतार सारा,
आप पर न्यारा जानि मिथ्याभाव मानै हैं।।४३०।।

जिन्हें इन्द्रियाँ ग्रहण कर सकती हैं, वे मूर्तिक पुद्गल हैं। शेष पाँच द्रव्य अमूर्तिक हैं। मन मूर्तिक व अमूर्तिक दोनों को ग्रहण करता है।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने भावार्थ में कहा है कि – इस लोक में जीव स्पर्श–रस–गन्ध–वर्ण वाले पदार्थों को स्पर्शन–रसना–घ्राण–चक्षु – इन चार भावइन्द्रियों द्वारा जानता है, द्रव्य इन्द्रियाँ उसमें निमित्त होती हैं। वे द्रव्येन्द्रियाँ सब पुद्गल हैं, मूर्तिक हैं। इन्द्रियाँ तो पर पदार्थों को ग्रहण करती नहीं हैं तथा छोड़ती भी नहीं हैं, किन्तु आत्मा भी कर्म को ग्रहण करता है तथा छोड़ता नहीं है।

यद्यपि कोई सूक्ष्मस्कन्ध या परमाणु इन्द्रियों द्वारा जानने में नहीं आते, तो भी इन पुद्गलों में ऐसी शक्ति है कि जब वे स्थूलता को धारण करते हैं तब इन्द्रिय गम्य होते हैं।

आत्मा तथा धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाश व काल भी अतीन्द्रिय हैं ये इन्द्रिय ग्राह्य नहीं हैं। हाँ, भाव मन के क्षयोपशम और द्रव्यमन के निमित्त से मूर्तिक व अमूर्तिक – दोनों प्रकार के पदार्थों को जान सकते हैं।

वर्तमान में जो स्थूल मूर्त स्कंध इन्द्रियों द्वारा जानने में आते हैं, वे विभाव पर्यायें हैं, वे संयोगी पदार्थ हैं। वे सब व्यवहार नय के विषय हैं। निश्चय द्रव्य तो मूल परमाणु है, वह भी अतीन्द्रिय है।

इसप्रकार गाथा ९९ के आधार पर मूर्त–अमूर्त द्रव्यों का वर्णन हुआ। इसप्रकार चूलिका समाप्त हुई। ●

वेदी शुद्धि का भव्य आयोजन

जयपुर : यहाँ घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार स्थित श्री दि. जैन तेरापंथ बड़ा मंदिर (टोडरमलजी का मंदिर) में दिनांक 16 एवं 17 जुलाई को विशाल रथयात्रा एवं वेदी शुद्धि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दिनांक 16 जुलाई को प्रात: ध्वजारोहण के पश्चात् घटयात्रा पूर्वक 108 कलशों से वेदी की शुद्धि की गई, पश्चात् यागमण्डल विधान एवं सायंकाल श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा भक्ति–संगीत का कार्यक्रम रखा गया।

दिनांक 17 जुलाई को प्रात: नित्यपूजन के उपरान्त वेदियों पर जिन प्रतिमायें विराजमान की गईं।

आयोजन में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के मार्मिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला। वेदि शुद्धि एवं विधानादि के समस्त कार्य भी आपने ही संपन्न कराये।

पाठकों के पत्र

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत 'मोक्षमार्गप्रकाशक का सार' पुस्तक को पढकर **बून्दी (राज.) से श्री मदनगोपालजी गोयल** लिखते हैं कि –

'टोडरमल संस्थान से प्राप्त 'मोक्षमार्गप्रकाशक का सार' पढते समय ऐसा लगा कि 'जैनदर्शन' की जिन बातों को मैं 45 वर्षों पूर्व से जानना चाहता था, वे अब पढने को मिली हैं। 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग:' सूत्र रूप में तो रटते–रटाते रहे; पर उनका वास्तविक शुद्ध स्वरूप क्या है ? – यह इस पुस्तक को पढकर ही समझ में आया।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने यह 'मोक्षमार्गप्रकाशक का सार'लिखकर और आपने संस्था से प्रकाशित कर मुझ जैसे अल्पज्ञ व मन्दमति पर अत्यन्त उपकार किया है, अन्यथा उस मूल 'मोक्षमार्गप्रकाशक' तक हमारी गति (पहुँच) कहाँ से हो पाती।

डॉ. साहब ने बीच–बीच में अपनी ज्ञानगर्भित, शास्त्रसम्मत टिप्पणियाँ देकर विषयवस्तु को हृदयंगम कराते हुए 'मोक्ष' का तथा 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र' का सही स्वरूप प्रकट किया, जो स्तुत्य है। जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप क्या है ? सम्यज्ञान, दर्शन और चारित्र की उपलब्धि के द्वारा मोक्ष कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? – इसे जानने के इच्छुक भाई–बहिनों को अन्य–अन्य शास्त्रों में नहीं उलझकर मात्र डॉ. साहब द्वारा लिखित यह 'मोक्षमार्गप्रकाशक का सार' ही पढकर इसका अनुशीलन कर लेना चाहिए। यह पुस्तक उनके लिए सच्ची मार्गदर्शक होगी।

जैन भूगोल पर विशेष व्याख्यान

मुम्बई : यहाँ जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा भारतीय विद्या भवन में दिनाँक 11 जुलाई को जैन भूगोल एवं विश्वदर्शन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा का उक्त विषय पर रोचक एवं सरल शैली में अत्यंत सारगर्भित, तार्किक, आगमानुसार व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम में पण्डितजी की प्रवचन शैली से परिचित श्रोताओं की उपस्थिति भी आश्चर्यकारक थी; स्टडी सर्किल के विगत 25 वर्षों के एक दिवसीय कार्यक्रम के इतिहास में यह अत्यंत सफल कार्यक्रम रहा। पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने लगातार 3 घंटे तक प्रवचन किया, जिसका लगभग 800 लोगों ने लाभ लिया।

मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु –

आवश्यक सूचना

1. द्विवर्षीय विशारद एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद – इसप्रकार पाँच वर्ष के अध्ययन हेतु प्रवेश फार्म मात्र एक बार प्रथम वर्ष में ही भरना है। प्रतिवर्ष आवेदन फार्म भरने की आवश्यकता नहीं है।

2. प्रत्येक छात्र को एक एनरोलमेन्ट नं. दिया जाता है, जो उसको 5 वर्ष तक काम आता है; अत: उसे सम्हालकर रखें एवं प्रत्येक जानकारी पत्राचार हेतु इस एनरोलमेन्ट नं. का उल्लेख अवश्य करें। उत्तर पुस्तिका पर एनरोलमेन्ट नं. के साथ अपना नाम, पिता/पति का नाम, स्थान व परीक्षा विषय का उल्लेख अनिवार्य है।

3. फीस प्रतिवर्ष 100/– निश्चित है। दो वर्ष की फीस 200/– और तीन वर्ष की फीस 300/– इसप्रकार दो किश्तों में भी भेज सकते हैं।

4. फीस मनीऑर्डर द्वारा भेजें। यदि फीस बैंक द्वारा भेज रहे हों तो ड्राफ्ट ''श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर'' के नाम से फीस आप पी.एन.बी. जयपुर के खाता संख्या 0247000100005153 में चैक, डी डी, ऑनलाइन या नकदी से सीधे भी जमा करा सकते हैं; परन्तु उसकी सूचना जयपुर परीक्षाबोर्ड कार्यालय को अवश्य भेजें। 'टोडरमल मुक्त विद्यापीठ' के नाम से फीस नहीं भेजें।

5. पाँच वर्ष के कोर्स को प्रतिवर्ष 2 सेमेस्टर के हिसाब से कुल 10 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा प्रतिवर्ष जून में और द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में आयोजित की जाती है। इसके लिए प्रश्नपत्र सामग्री परीक्षार्थी के पते पर डाक द्वारा/कोरियर/ई–मेल द्वारा 10 दिन पूर्व भेज दिये जाते हैं।

मार्गदर्शन हेतु कार्यालय के कार्य दिवसों में 10.30 से 4.30 बजे तक फोन नं. 0141–2705581, 2707458 पर संपर्क करें। पूर्ण विवरण के साथ पत्र लिखकर ज्यादा अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

– प्रबन्धक, ओ. पी. आचार्य, श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ, ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)

रत्नत्रय मण्डल विधान संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमंधर जिनालय में आषाढ मास की अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 8 से 15 जुलाई तक श्री रत्नत्रय मण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार की गाथा 17–18 पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि विधान के कार्य पण्डित मधुवनजी मुजफ्फरनगर द्वारा श्री प्रकाशचंदजी पाण्ड्या, पण्डित मनोज कुमारजी कासलीवाल, श्रीमती अलका पाटनी एवं श्रीमती सुमन बड़जात्या के सहयोग से संपन्न हुये।

अंत में श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया द्वारा विद्वानों का आभार प्रदर्शन किया गया।

श्री टोडरमल स्मारक भवन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु –

आमंत्रण रथ का प्रवर्तन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी–2012 में होने वाले पंचकल्याणक के प्रचार–प्रसार हेतु पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन दिनांक 26 जून को प्रारंभ होकर 15 जुलाई को सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन के मंगल अवसर पर ब्र.यशपालजी जैन एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा द्वारा रथ पर स्वस्ति बनाकर रथ का शुभारंभ श्री टोडरमल महाविद्यालय के समस्त छात्रों की उपस्थिति में भजनादि प्रस्तुत करते हुए धूमधाम से किया गया।

रथ के साथ पण्डित करणजी शाह बड़ौदरा, पण्डित मनोजजी जैन चीनी वाले मुजफ्फरनगर, पण्डित मधुवनजी मुजफ्फरनगर आदि विद्वान उपस्थित थे। दिनांक 5 जुलाई से पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली भी सम्मिलित हुये।

यह रथ दिनांक 27 जून को प्रात: रुड़की, दिनांक 28 जून को ऋषिकेश एवं 29 जून को देहरादून पहुँचा। रथ का सभी जगह अपूर्व उत्साह के साथ स्वागत किया गया और सभी जगह कलश आदि की बुकिंग के रूप में भरपूर राशियों के वचन भी संस्था को प्राप्त हुये। यह रथ सहारनपुर, कांदला, गंगेरु, मुजफ्फरनगर, खतौली, खेकड़ा, बड़ौत होते हुए दिनांक 15 जुलाई को जयपुर आ गया। इसप्रकार इस रथ द्वारा पूरे देश के मुख्य–मुख्य स्थानों पर भ्रमण कर साधर्मीभाइयों को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में जयपुर आने हेतु निमंत्रण दिया गया।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में –

1. दिनांक 17 जुलाई को **'जिन चरणानुयोग से जैनत्व सिद्धि'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित मनीषजी कहान ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शास्त्री वर्ग से साकेत जैन एवं उपाध्याय वर्ग से समकित जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। गोष्ठी का संचालन संयम जैन व पलाश जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

2. दिनांक 24 जुलाई को **'जैनदर्शन के आलोक में पूजन का महत्व'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री विनयजी पापड़ीवाल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शास्त्री वर्ग से श्रुति जैन दिल्ली एवं उपाध्याय वर्ग से हेमचंद्र जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गोष्ठी का संचालन अनिल जैन व आशीष जैन ने किया।

संचालन अंकित जैन व प्रफुल्ल शेंडगे (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। आभार प्रदर्शन व साहित्य भेंट पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के नवीन सत्र के छात्रों का ह्र

परिचय सम्मेलन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दि.जैन मंदिर बैनाड (जयपुर) में दिनाँक १६ जुलाई को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के नवीन छात्रों का परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर अध्यक्ष के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, श्री माणिकचंदजी, श्री छीतरलालजी, श्री मनोजजी एवं श्रीमती कमला भारिल्ल आदि मंचासीन थे। इन सभी का मार्गदर्शन छात्रों को प्राप्त हुआ।

परिचय के क्रम में अच्युकांत जैन, शुभम जैन, अनुभव जैन व अक्षय जैन ने कनिष्ठ उपाध्याय, जिनेश जैन, मयंक जैन व नितिन जैन ने वरिष्ठ उपाध्याय, सचिन जैन व सुमतिनाथ जैन ने शास्त्री प्रथम वर्ष, अमितेन्द्र जैन व गोम्मटेश्वर चौगुले ने शास्त्री द्वितीय वर्ष एवं स्वानुभव जैन, सुधर्म जैन व विश्वास जैन ने शास्त्री तृतीय वर्ष का परिचय दिया।

महाविद्यालय में इस वर्ष ४९ नवीन छात्रों का प्रवेश किया गया।

सम्मेलन से पूर्व जिनेन्द्र पूजन का भी कार्यक्रम रखा गया।

अन्त में शास्त्री तृतीय वर्ष की ओर से 'शाकाहार' से संबंधित एक लघु नाटिका का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजन में अनिल जैन व आशीष जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) का अपूर्व योगदान रहा।

शोक समाचार

1. दिल्ली निवासी श्रीमती संतरा जैन माताश्री सुभाषचंदजी जैन का दिनांक 18 जुलाई को 85 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल महाविद्यालय के 1 विद्यार्थी के अध्ययन हेतु 30 हजार रुपये सधन्यवाद प्राप्त हुये।

2. नागपुर (महा.) निवासी श्री शिखरचंदजी जैन का दिनांक 22 जुलाई को 78 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पिछले 11 वर्षों से श्री कुन्दकुन्द दि.जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट के अध्यक्ष थे। आप स्वयं जीवनभर वीतरागी तत्त्वज्ञान से जुड़े रहे। आपका पूरा परिवार गहन स्वाध्यायी है। यह आपके ही द्वारा दिये गये संस्कारों का फल है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही भावना है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

74 बीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब चरणानुयोग के बारे में विचार करते हैं।

चरणानुयोग में दो प्रकार से उपदेश दिया जाता है। मात्र व्यवहार का और निश्चय सहित व्यवहार का।

जिन जीवों को निश्चय का ज्ञान नहीं है और उपदेश देने पर भी होता दिखाई न दे, उन्हें तो केवल व्यवहार का ही उपदेश देते हैं।

तथा जिन जीवों को निश्चय-व्यवहार का ज्ञान है अथवा जिन्हें उपदेश देने पर ज्ञान होता जाने - ऐसे सम्यग्दृष्टि व सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि जीवों को निश्चय सहित व्यवहार का उपदेश देते हैं।

असंज्ञी जीव तो उपदेश ग्रहण कर ही नहीं सकते; अत: अन्य जीवों को उनकी दया करने का उपदेश देकर उनका उपकार करते हैं।

व्यवहार उपदेश में तो बाह्य क्रियाओं की प्रधानता रहती है और निश्चय सहित व्यवहार के उपदेश में परिणामों की प्रधानता रहती है।

व्यवहार उपदेश में सम्यग्दर्शन के लिए अरहंत देव, निर्ग्रन्थ गुरु और दयारूप धर्म को ही मानना, अन्य को नहीं मानना, जीवादि तत्त्वों का श्रद्धान करना; सम्यग्ज्ञान के लिए जैनशास्त्रों का स्वाध्याय करने और सम्यक्चारित्र के लिए हिंसादि पापों का त्याग करके व्रतादि का पालन करने का उपदेश देते हैं।

निश्चय सहित व्यवहार के उपदेश में सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान के लिए स्वपरभेदविज्ञान पूर्वक तत्त्वश्रद्धान करने का और सम्यक्चारित्र के लिए रागादि भाव दूर करने का उपदेश देते हैं।

चरणानुयोग में छद्मस्थ की बुद्धिगोचर स्थूलपने की अपेक्षा लोक प्रवृत्ति की मुख्यता से उपदेश देते हैं; केवलज्ञानगम्य सूक्ष्मपने की अपेक्षा उपदेश नहीं देते; क्योंकि उसका आचरण संभव नहीं है।

आज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि शास्त्रों में पात्र जीव को दान देने का आदेश है और पात्र तीन प्रकार के बताये गये हैं। छठवें-सातवें गुणस्थान में रहनेवाले मुनिराज उत्तम पात्र हैं, व्रती श्रावक मध्यम पात्र हैं और अविरत सम्यग्दृष्टि जघन्य पात्र हैं; शेष सभी मिथ्यादृष्टि अपात्र हैं। सैद्धान्तिक दृष्टि से तो यह एकदम सही है; पर व्यावहारिक दृष्टि से पात्र व्यक्ति के संबंध में निर्णय करना आसान नहीं है। इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं -

''तथा चरणानुयोग में व्यवहार-लोक-प्रवृत्ति की अपेक्षा ही नामादिक कहते हैं। जिसप्रकार सम्यक्त्वी को पात्र कहा तथा मिथ्यात्वी को अपात्र कहा; सो यहाँ जिसके जिनदेवादिक का श्रद्धान पाया जाये वह तो सम्यक्त्वी, जिसके उनका श्रद्धान नहीं है, वह मिथ्यात्वी जानना। क्योंकि दान देना चरणानुयोग में कहा है; इसलिए चरणानुयोग के ही सम्यक्त्व-मिथ्यात्व ग्रहण करना।

करणानुयोग की अपेक्षा सम्यक्त्व-मिथ्यात्व ग्रहण करने से वही जीव ग्यारहवें गुणस्थान में था और वही अन्तर्मुहूर्त में पहले गुणस्थान में आये तो वहाँ दातार पात्र-अपात्र का कैसे निर्णय कर सके ?

तथा द्रव्यानुयोग की अपेक्षा सम्यक्त्व-मिथ्यात्व ग्रहण करने पर मुनिसंघ में द्रव्यलिंगी भी हैं और भावलिंगी भी हैं; सो प्रथम उनका ठीक (निर्णय) होना कठिन है; क्योंकि बाह्य प्रवृत्ति समान है।

तथा यदि कदाचित् सम्यक्त्वी को किसी चिह्न द्वारा ठीक (निर्णय) हो जाये और वह उसकी भक्ति न करे तो औरों को संशय होगा कि इसकी भक्ति क्यों नहीं की ?

इसप्रकार उसका मिथ्यादृष्टिपना प्रगट हो तब संघ में विरोध उत्पन्न हो; इसलिए यहाँ व्यवहार सम्यक्त्व-मिथ्यात्व की अपेक्षा कथन जानना।

यहाँ कोई प्रश्न करे - सम्यक्त्वी तो द्रव्यलिंगी को अपने से ही हीनगुणयुक्त मानता है, उसकी भक्ति कैसे करें ?

समाधान - व्यवहारधर्म का साधन द्रव्यलिंगी के बहुत है और भक्ति करना भी व्यवहार ही है। इसलिए जैसे - कोई धनवान हो, परन्तु जो कुल में बड़ा हो, उसे कुल अपेक्षा बड़ा जानकर उसका सत्कार करता है; उसीप्रकार आप सम्यक्त्व गुण सहित है, परन्तु जो व्यवहारधर्म में प्रधान हो, उसे व्यवहारधर्म की अपेक्षा गुणाधिक मानकर उसकी भक्ति करता है, ऐसा जानना।

इसीप्रकार जो जीव बहुत उपवासादि करे उसे तपस्वी कहते हैं; यद्यपि कोई ध्यान-अध्ययनादि विशेष करता है, वह उत्कृष्ट तपस्वी है; तथापि यहाँ चरणानुयोग में बाह्यतप की प्रधानता है, इसलिए उसी को तपस्वी कहते हैं। इसप्रकार अन्य नामादिक जानना।[१]''

इसप्रकार चरणानुयोग के प्रयोजन और उसकी कथन पद्धति का स्वरूप कहा। अब द्रव्यानुयोग के बारे में बात करते हैं।

द्रव्यानुयोग में जैन तत्त्वज्ञान से अपरिचित जीवों को जैन तत्त्वज्ञान से परिचित कराने के लिए जीवादि द्रव्यों व तत्त्वों का स्वपरभेदविज्ञान की मुख्यता से उदाहरणों के माध्यम से सयुक्ति विवेचन करते हैं। इससे उनकी अनादि अज्ञानता दूर होती है। तत्त्वज्ञानी जीवों को यह सभी कथन अपने श्रद्धान के अनुसार ही प्रतिभासित होता है।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २८३-२८४

द्रव्यानुयोग में मोक्षमार्ग का श्रद्धान कराने के लिए जीवादि तत्त्वों का युक्ति, हेतु और दृष्टान्तों द्वारा विशेष निरूपण करते हैं। जिसप्रकार स्वपर-भेदविज्ञान हो, उसप्रकार जीव-अजीव का निर्णय कराते हैं और जिसप्रकार वीतरागभाव प्रगट हो, उसप्रकार आस्रवादि का स्वरूप बताते हैं।

उक्त संदर्भ में सचेत करते हुए पण्डित टोडरमलजी कहते हैं -

''तथा द्रव्यानुयोग में निश्चय अध्यात्म-उपदेश की प्रधानता हो, वहाँ व्यवहार धर्म का भी निषेध करते हैं। जो जीव आत्मानुभव का उपाय नहीं करते और बाह्य क्रियाकाण्ड में मग्न हैं, उनको वहाँ से उदास करके आत्मानुभवनादि में लगाने के लिए व्रत-शील-संयमादिक का हीनपना प्रगट करते हैं।

वहाँ ऐसा नहीं जान लेना कि इनको छोड़कर पाप में लगना है; क्योंकि उस उपदेश का प्रयोजन अशुभ में लगाने का नहीं है। शुद्धोपयोग में लगाने को शुभोपयोग का निषेध करते हैं।[१]

तथा जो जीव जिनबिम्ब भक्ति आदि कार्यों में ही मग्न हैं, उनको आत्मश्रद्धानादि कराने के लिए 'देह में देव है, मंदिरों में नहीं' - इत्यादि उपदेश देते हैं। वहाँ ऐसा नहीं जान लेना कि भक्ति छोड़कर भोजनादिक से अपने को सुखी करना; क्योंकि उस उपदेश का प्रयोजन ऐसा नहीं है।

इसीप्रकार अन्य व्यवहार का निषेध करते हैं, उसे जानकर प्रमादी नहीं होना। ऐसा जानना कि जो केवल व्यवहार साधन में ही मग्न हैं, उनको निश्चय रुचि कराने के अर्थ व्यवहार को हीन बतलाया है।[२]**''**

द्रव्यानुयोग में भी चरणानुयोग के समान ग्रहण-त्याग कराने का प्रयोजन है; इसलिए छद्मस्थ के बुद्धिगोचर परिणामों की अपेक्षा कथन किया है। मात्र इतना ही अन्तर है कि **चरणानुयोग में बाह्य क्रिया की मुख्यता से कथन होता है और द्रव्यानुयोग में आत्मपरिणामों की मुख्यता से निरूपण करते हैं। करणानुयोग के समान सूक्ष्म वर्णन उक्त दोनों ही अनुयोगों में नहीं होता।**

जहाँ एक ओर चरणानुयोग कहेगा कि आचरण सुधरेगा तो परिणाम भी सुधर जावेंगे, इसलिए पहले आचरण तो सुधारो; वहीं दूसरी ओर द्रव्यानुयोग में यह कहा जायेगा कि परिणाम सुधरे बिना कोरे बाह्य क्रिया-काण्ड से कुछ नहीं होता। यदि परिणाम सुधर गये तो आचरण भी सुधरे बिना नहीं रहेगा। अध्यात्म उससे भी आगे जायेगा और कहेगा कि अभिप्राय ठीक हुए बिना, मिथ्यात्व गये बिना, **आत्मानुभूति हुए बिना न क्रियाकाण्ड रूप सदाचार काम आयेगा और न शुभ परिणामों से ही कुछ होगा।**

इसप्रकार हम देखते हैं कि प्रयोजन विशेष से अलग-अलग स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के कथन मिलेंगे। अत: हमारा कर्तव्य है कि हम प्रयोजन को ध्यान में रखकर विभिन्न अपेक्षाओं से किये गये कथनों के मर्म को समझे; उन्हें विरोधाभासी समझकर दिग्भ्रमित न हों।

यदि हम इन अनुयोगों के निरूपण की पद्धति को अच्छी तरह नहीं समझेंगे तो हमें जिनागम में कदम-कदम पर विरोध नजर आयेगा। आजकल बहुत कुछ ऐसा हो भी रहा है। **कुछ लोग कहते हैं कि शुद्धोपयोग सातवें गुणस्थान और उसके ऊपर के गुणस्थानों में ही होता है; किन्तु कुछ लोगों का कहना यह है कि धर्म का आरंभ शुद्धात्मानुभूति अर्थात् शुद्धोपयोग से चौथे गुणस्थान में भी हो सकता है, होता है।**

आज जिन समस्याओं का समाधान बड़े-बड़े पण्डित और संतजन भी मिलकर नहीं कर पा रहे हैं; उनका समाधान आज से ढाई सौ वर्ष पहले पण्डित टोडरमलजी ने अपनी कोठरी में बैठे-बैठे निकाल लिया था।

''उपयोग के शुभ, अशुभ, शुद्ध - ऐसे तीन भेद कहे हैं; वहाँ धर्मानुरागरूप परिणाम वह शुभोपयोग, पापानुरागरूप व द्वेषरूप परिणाम वह अशुभोपयोग और राग-द्वेषरहित परिणाम वह शुद्धोपयोग - ऐसा कहा है; सो इस छद्मस्थ के बुद्धिगोचर परिणामों की अपेक्षा यह कथन है; करणानुयोग में कषायशक्ति की अपेक्षा गुणस्थानादि में संक्लेश-विशुद्ध परिणामों की अपेक्षा निरूपण किया है, वह विवक्षा यहाँ नहीं है।

करणानुयोग में तो रागादि रहित शुद्धोपयोग यथाख्यातचारित्र होने पर होता है, वह मोह के नाश से स्वयमेव होगा; निचली अवस्था वाला शुद्धोपयोग का साधन कैसे करे ?

तथा द्रव्यानुयोग में शुद्धोपयोग करने का ही मुख्य उपदेश है; इसलिए वहाँ छद्मस्थ जिस काल में बुद्धिगोचर भक्ति आदि व हिंसा आदि कार्यरूप परिणामों को छोड़कर आत्मानुभवनादि कार्यों में प्रवर्ते, उसकाल उसे शुद्धोपयोगी कहते हैं।

यद्यपि यहाँ केवलज्ञानगोचर सूक्ष्मरागादिक हैं; तथापि उसकी विवक्षा यहाँ नहीं की, अपनी बुद्धिगोचर रागादिक छोड़ता है, इस अपेक्षा उसे शुद्धोपयोग कहा है।[१]**''**

निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए पण्डितजी लिखते हैं -

''इसलिए द्रव्यानुयोग के कथन की विधि करणानुयोग से मिलाना चाहे तो कहीं तो मिलती है, कहीं नहीं मिलती। जिसप्रकार यथाख्यात चारित्र होने पर तो दोनों अपेक्षा शुद्धोपयोग है, परन्तु निचली दशा में द्रव्यानुयोग अपेक्षा से तो कदाचित् शुद्धोपयोग होता है, परन्तु करणानुयोग अपेक्षा से सदाकाल कषाय अंश के सद्भाव से शुद्धोपयोग नहीं है। इसीप्रकार अन्य कथन जान लेना।[२]**''**

इसप्रकार द्रव्यानुयोग का प्रयोजन और पद्धति का निरूपण किया।

(क्रमश:)

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २८४ २. वही, पृष्ठ २८५

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २८५-२८६ २. वही, पृष्ठ २८६

2 अगस्त 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

छपते-छपते

हमें अभी-अभी प्रकाशनार्थ एक पत्र अलीगढ़ से श्री पवनजी जैन का प्राप्त हुआ है; जिसमें वे लिख रहे हैं कि आज मैं पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार के 19वीं बार हुये प्रवचनों को सुन रहा था। साथ-साथ समयसार सिद्धि भाग-9 को पढ़ रहा था। ये प्रवचन दिसम्बर 1979 में दिये गये थे।

यह तो आपको विदित ही है कि ये प्रवचन शब्दश: प्रकाशित हैं। अत: सुनने के साथ-साथ पढ़ने से सुनने में सुविधा रहती है। समयसार गाथा 308 से 311 पर प्रवचन चल रहे थे। क्रमबद्ध सिद्धांत की चर्चा आने पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं -

'' अहाहा ! जरा सूक्ष्म बात है। अधिक स्पष्ट तो भाई हुकमचंदजी ने लिखा है। वे क्रमबद्धपर्याय पर एक पुस्तक प्रकाशित करने वाले हैं।

सम्पूर्ण आलेख थोड़ा-थोड़ा आ गया है; पूरा तो जब क्रमबद्धपर्याय संबंधी पुस्तक छपेगी, तब आयेगा।

क्रमबद्ध सम्बन्धी आलेख हुकमचंदजी ने आचार्य विद्यानन्दजी को भी दिया था।

मैंने तो उनका आलेख अनेक बार पढ़ा है। अभी ताजा-ताजा दो बार पढ़ा है।''

बात ऐसी है कि अन्य पुस्तकों के समान यह क्रमबद्धपर्याय पुस्तक भी पहले क्रमश: आत्मधर्म (हिन्दी) के संपादकीय के रूप में छपती रही है। गुरुदेवश्री ने उसे पढ़ा होगा।

इसका पुस्तकाकार संक्षिप्त रूपान्तर पहले 200 प्रतियों में छपा था। अनेक विद्वानों के साथ एक कॉपी आचार्य विद्यानन्दजी को भी दी थी। वे उस समय जयपुर में ही थे।

हो सकता है गुरुदेवश्री ने यह पुस्तक भी पढ़ी होगी।

यह प्रवचन गुरुदेवश्री के अन्तिम समय के हैं।

पवनजी का फोन भी आया था और उन्होंने बड़े ही आह्लाद के साथ इसके प्रकाशन का अनुरोध किया था।

गुरुदेवश्री के अनुयायी होकर जो लोग डॉ. भारिल्ल का विरोध करते हैं, उन्हें गुरुदेवश्री के उक्त कथन पर ध्यान देना चाहिये। **- संपादक**

पिज्जा न खायें

यदि आप पिज्जा खाने के शौकीन हैं एवं शाकाहारी हैं तो गमी पिज्जा बिलकुल न खायें; क्योंकि ये पिज्जा गोमांसयुक्त है। 15 ग्राम के छोटे से पैकेट में बंद यह पिज्जा पाँच स्लाइस में होता है एवं प्रत्येक स्लाइस पर बीफ (गाय का मांस) की परत होती है। पिज्जा के रैपर पर मांसाहार का लोगो (लाल चिह्न) नहीं है, उत्पादन में प्रयुक्त सामग्री की लिस्ट में बारीक अक्षरों में 'बीफ जिलेटिन' (गोवंश मांस की परत) लिखा हुआ है।

इस संबंध में मेरठ के कमिश्नर भुवनेश कुमार का कहना है कि ऐसे पिज्जा की बिक्री के खिलाफ न केवल मेरठ बल्कि पूरे मंडल में अभियान चलाया जायेगा।

मेरठ के सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल ने यह मामला संसद में उठाया है। मेरठ के जागरूक पत्रकार अजय मित्तल ने भी इसकी सूचना प्रसारित कर अपने दायित्व का निर्वाह किया है।

केन्द्र के कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री मंत्रालय के डायरेक्टर जनरल (फॉरेन ट्रेड) की ओर से सभी राज्यों के मुख्य सचिव को भेजे गए पत्र में ऐसे पिज्जा की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाने का आग्रह किया है। इसमें पिज्जा निर्माता ही नहीं; बल्कि बेचने वाले के विरुद्ध भी कार्यवाही करने को कहा गया है।

हार्दिक बधाई !

दिल्ली स्थित आत्म साधना केन्द्र के आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की तीन छात्राओं को अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद, दिल्ली द्वारा जैन स्कॉलर्स अवार्ड से सम्मानित किया गया।

जैनपथप्रदर्शक व टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127